

मुगल मनसबदारी व्यवस्था का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

(An Analytical Study of the Mughal Mansabdari System)

Ramji Pandey

Ramji171285@gmail.com

Student of Indira Gandhi National Open University.

प्रस्तावना:- मनसबदारी व्यवस्था एक ऐसी व्यवस्था था जिसका शुरुआत अकबर द्वारा 1571 ईस्वी में किया गया था। यह एक प्रशासनिक और सैन्य प्रणाली थी जिसमें अधिकारियों और घुड़सवारों की संख्या के आधार पर श्रेणीबद्ध किया जाता था। यह प्रणाली दशमलव प्रणाली पर आधारित था, जहां मनसबदार कुलीन वर्ग, सेना और प्रशासन का हिस्सा होते थे। मनसब एक अरबी शब्द है जिसका अर्थ पद, रैंक, या दर्जा, होता है। इस व्यवस्था के अंतर्गत मानसबदारों की नियुक्ति पदोन्नति या बर्खास्तगी सीधे सम्राट द्वारा किया जाता था। अगर इस व्यवस्था को चलाने में कोई योद्धा सक्षम नहीं होता था या इस गरिमा को संभाल नहीं पता था तब उसकी बर्खास्तगी सम्राट के द्वारा किया जाता था। यह पद वंशानुगत नहीं होता था क्योंकि इस व्यवस्था के अंतर्गत सैन्य और अधिकारियों की नियुक्ति उनकी योग्यता के आधार पर किया जाता था ताकि राज्य प्रणाली को सुचारू रूप से चलाया जा सके। इस व्यवस्था के अंतर्गत मानसबदारों को नगद (नकदी) या जागीर (भूमि अनुदान) के रूप में वेतन मिलता था। मानसबदारों को घुड़सवार, तीरंदाज, और अन्य सैनिक रखने होते थे जिन्हें दाग और चेहरा प्रणाली के माध्यम से सत्यापित किया जाता था। मनसबदारों का अक्सर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में स्थानांतरण किया जाता था ताकि स्थानीय सत्ता केंद्र न बन सके। इस व्यवस्था के अंतर्गत मुख्य रूप से नौकरशाही व्यवस्था को स्थापित करना तथा सेना को मजबूत करना था। यह मुगलों की प्रशासनिक और सैनिक शक्ति का मुख्य अंग था। मनसबदारी प्रणाली व्यवस्था का उद्देश्य अभिजात वर्ग और सैन्य को संगठित करना था। इसका महत्व इस बात में अंकित करता है कि इसने कुशल शासन राजस्व संग्रह और सैन्य संगठनों को सक्षम बनाया, जिससे मुगल साम्राज्य की स्थिरता और विस्तार में काफी योगदान मिला। जहांगीर और शाहजहां ने अकबर की मूल मनसबदारी व्यवस्था में नई प्राणियों लागू की, जहां जहांगीर द्वारा शुरू की गई प्रणाली को दु-अस्पा और सी अस्पा कहा गया। वहीं शाहजहां द्वारा लाई गई प्रणाली माह- अनुपात या माह - पैमाना प्रणाली था। इस प्रणाली के तहत चुनिंदा अमीरों को जात रैंक में बिना कोई बदलाव किए सैनिकों की एक बड़ी टुकड़ी रखने की अनुमति प्रदान की जाती थी

कुंजी शब्द:- मनसबदारी, जर्मीदार, सेवादार, शासन, सैन्य संगठन और अधिकारी

मुगलों ने अपने साम्राज्य को अत्यधिक सुदृढ़ बनाने के लिए तरह-तरह के विधि और पद्धतियां अपनाईं ताकि उनके राज्य की व्यवस्था में किसी प्रकार की समस्या न हो। उन्होंने अपनी स्थिति व्यवस्थित बनाए रखने के लिए मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत साम्राज्य का सुदृढ़ीकरण करना आरंभ किया। कुलीन वर्ग को प्रशासन में शामिल करने और इसी के माध्यम से उनकी वफादारी राज्य के प्रति

सुनिश्चित करना उनका मुख्य उद्देश्य था। सैनिक और असैनिक सेवाओं का कुशलता पूर्वक संचालन करना था, ताकि संपूर्ण व्यवस्था को बनाए रखा जा सके। मुगलों ने इस व्यवस्था में समय-समय पर अनेक परिवर्तन भी किए हैं, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य यही था की अनेक व्यवस्थाओं के प्रयास से संपूर्ण आंतरिक व्यवस्था बना रहे तथा राज्य की राजशाही व्यवस्था सुचारू रूप से चलता रहे। जिसके लिए उन्होंने अनेक नियम कानून का भी प्रतिपादन किया ताकि किसी प्रकार की अव्यवस्था का सामना न करना पड़े।

साहित्य पुनरावलोकन:- मनसबदारी व्यवस्था एक अनोखी प्रणाली है, जिसे भारत में मुगलों द्वारा शुरू किया गया था। इस प्रणाली में किसी व्यक्ति को दिया गया मनसब या पद आधिकारिक पदानुक्रम में उसकी स्थिति और उसके वेतन दोनों को निर्धारित करता था। इसके साथ ही यह उन सशस्त्र सैनिकों या ताबीनान की संख्या भी तय करता था जिन्हें राज्य की सेवा के लिए बनाए रखने की जिम्मेदारी मनसबदार की होती थी(Reddy, et al, 2024)। मनसब मूल रूप से मुगलशाही सेवाओं में एक प्रशासनिक पद था जो प्रकृति में पदानुक्रमित था, हर नागरिक और सैनिक अधिकारी को एक मनसब पद दिया जाता था। अधिकारियों का वेतन इसी पद के आधार पर तय किया जाता था। मनसबदारी मूल रूप से वह व्यवस्था था जिसके माध्यम से अकबर ने अपने कुलीनों को संगठित किया था। यह कोई वंशानुगत पद नहीं था और एक मनसबदार का अक्सर एक स्थान से दूसरे स्थान पर तबादला कर दिया जाता था ताकि उसे स्थानीय स्तर पर अपनी जड़े जमाने का अवसर न मिल सके(Mukherjee, 2024)। मुगल साम्राज्य पर अकबर का राज्य भारत के इतिहास के सबसे अहम दौर में से एक है, जिसमें संस्कृति, प्रशासन तथा सैन्य में बड़े विकास हुए हैं। मुगल के नेतृत्व में उनके साम्राज्य का काफी विकास हुआ तथा वह धीरे-धीरे हर क्षेत्र में फैलते गए। इतिहास यह बताता है कि मुगल प्रशासन शक्तिशाली प्रशासन था तथा उन्होंने इस व्यवस्था को बनाए रखने के लिए अनेक नियम पद्धति बनाए थे(Das, 2025)। मुगलों ने एक ऐसी शाही समाज की स्थापना की जिसकी शक्ति कई स्रोतों से प्राप्त होती थी। जिसका प्रभाव सम्राटों के अधीन होता था। मुगल विजय का रहस्य यह था कि प्रत्येक सम्राट ने अपनी विशाल सत्ता के अधीन कई सेना को संगठित किया। मुगलों के सेनापतियों को व्यवस्थित रूप से शक्तिशाली, गतिशील, सुसज्जित और निर्णायक होना आवश्यक था, लेकिन साम्राज्य के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए उन्हें वफादार भी बड़े पैमाने पर बने रहना पड़ता था।(kayali, 2018) अनेक इतिहासकारों ने इस बात पर सहमति जताई है कि अकबर सभी मुगल सम्राटों में से सबसे शक्तिशाली था। इसका श्रेय उनके शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य की उन उपलब्धियां को दिया जाता है, जिनके चलते साम्राज्य का विस्तार पूरे भारत तक हो गया। मुगल को संगठित करने और एक-एक करके हिंदू राज्य को बिना किसी हार के जीतने की अकबर की क्षमता एक ऐसा कारनामा था, जिसे उनके पहले किसी ने भी हासिल नहीं किया था। उन्होंने अपने साम्राज्य को विस्तृत किया तथा अपने कार्यकाल के दौरान अनेक नियम बनाएं जिसके वजह से और सशक्त बन गए(Jamsari, et al, 2017)। मुगल साम्राज्य भारतीय उपमहाद्वीपों की एक महान मुस्लिम शक्ति थी, मुगल साम्राज्य के अस्तित्व और उसकी उपलब्धियां को इस्लामी सभ्यता का एक अनमोल रत्न माना जाता था। 1526 में बाबर द्वारा इसकी स्थापना को एशियाई महाद्वीपों में एक ऐसी इस्लामी शक्ति स्थापित करने की दिशा में कदम उठाया गया जो उस समय की समकालीन शक्तियों या सलीम प्रथम के नेतृत्व वाले उस्मानिया साम्राज्य और शाह

इस्लाम के नेतृत्व में साम्राज्य को अधिक मजबूत करने का प्रयास किया गया। मुगलों ने अपने साम्राज्य की सुदृढ़ करने के लिए अनेक प्रयास किया तथा तरह-तरह के नियम भी बनाए (Jamsari, ati all, 2017)।

शोध अंतराल:- मनसबदारी व्यवस्था मुगल साम्राज्य के एक ऐसी व्यवस्था था जिसके अंतर्गत प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ किया जाता था। इस व्यवस्था के अंतर्गत मुगलों ने अपने साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए अनेक नियम-कानून बनाकर व्यवस्था को कायम किया जिसमें से एक मनसबदारी व्यवस्था मुगल साम्राज्य को मजबूती प्रदान करने में सहायक था। इसके अंतर्गत आने वाले सैनिक अधिकारी अपनी जिम्मेदारी के साथ साम्राज्य का भी देखभाल करते थे तथा इसके अतिरिक्त भी वह कैसे कार्य करते थे इस पर शोध कार्य बहुत कम हुए हैं। इस दृष्टिकोण से मनसबदारी व्यवस्था से मुगल साम्राज्य कैसे प्रभावित हुआ आदि से संबंधित तथ्य प्राप्त करने के लिए यह अध्ययन अपेक्षणीय है।

शोध का उद्देश्य:- मुगल साम्राज्य में मनसबदारी व्यवस्था को समझना।

आंकड़े संकलन की विधि:- यह प्रस्तुत शोध मुगल साम्राज्य के मनसबदारी व्यवस्था पर आधारित है तथा मनसबदारी व्यवस्था क्या है और इसके अंतर्गत क्या-क्या होता है तथा मुगल लोग इस व्यवस्था के अंतर्गत कैसे सैन्य और अधिकारियों का नियुक्ति करते थे तथा उनके सेवा के बदले में उनका क्या भुगतान करते थे आदि से संबंधित तथ्य को प्राप्त करने के लिए मात्रात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग करते हुए वास्तविक तथ्य को प्राप्त किया गया है तथा इस प्रविधि के अंतर्गत सर्वेक्षण रिकॉर्ड रिव्यू पत्र पत्रिकाएं इंटरनेट आदि के द्वारा वास्तविक तथ्यों का प्राप्त किया गया है।

मुगल समाज पर मनसबदारी का प्रभाव:- मनसबदारी प्रणाली ने मुगल साम्राज्य को सामाजिक और राजनीतिक परिदृश्य पर काफी महत्वपूर्ण प्रभाव डाला था। हालांकि इस प्रणाली के कुछ दोष भी थे लेकिन इससे कहीं अत्यधिक उनके सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक जैसे मुद्दों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। क्योंकि यह व्यवस्था के अंतर्गत संपूर्ण व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए विस्तृत रूप से ध्यान दिया जाता था। सैनिकों से आशा किया जाता था कि वह राज्य की रक्षा अपने प्राण देकर भी करेगा तथा स्थिति के अनुसार समय-समय पर वह साम्राज्य के सम्राट को होने वाले समस्याओं या कैसा स्थिति है उसका विवरण प्रस्तुत करेगा। मनसबदारी व्यवस्था के अंतर्गत वंश देखकर कार्य नहीं किया जाता था बल्कि व्यवस्था को बनाए रखने के लिए निष्पक्ष भाव से सेवा प्रदान किया जाता था। ताकि किसी प्रकार का असहनीय कार्य साम्राज्य में न हो। इस दृष्टि से देखा जाए तो मनसबदारी व्यवस्था के कुछ नकारात्मक प्रभाव होते हुए भी काफी हद तक सकारात्मक प्रभाव भी रहा है जिसके वजह से मुगलो ने अपने साम्राज्य को विस्तृत करने में काफी सक्षम हुए थे।

विश्लेषण:- मनसबदारी व्यवस्था मुगलों की एक ऐसी व्यवस्था थी जिसके तहत मुगल अपने आप को सुप्रतिष्ठित करने में काफी सफल हुए थे। मानसबदारों की जीवन शैली एवं रुचियां के कारण व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ावा मिला। साथ उनकी आर्थिक संपन्नता से

विभिन्न कलाकारों के संरक्षण से क्षेत्रीय कला-साहित्य भाषा लोक संगीत को अत्यधिक बढ़ावा मिला। इतना ही नहीं मनसबदारी व्यवस्था के कारण उनके दैनिक जीवन में भी परिवर्तन आए। क्योंकि इसने राजनीतिक प्रशासनिक क्षेत्र के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक क्षेत्र में भी प्रभाव डाला और सामाजिक संस्कृति की विकास में अपनी एक अहम भूमिका निभाई, जिसके कारण मुगलों को उनके इस व्यवस्था के माध्यम से लाभ भी प्राप्त हुए। समय-समय पर जैसे-जैसे शासक आते गए वैसे-वैसे इस व्यवस्था में काफी परिवर्तन भी हुआ लेकिन सभी का उद्देश्य एक ही था कि इस व्यवस्था के माध्यम से साम्राज्य को स्थापित करते हुए अपनी स्थिति को बनाए रखना।

शोध का महत्व:- मनसबदारी व्यवस्था की जब शुरुआत की गई थी तब उस समय इसकी काफी प्रासंगिकता था, और यह मुगल प्रशासन को सुदृढ़ बनाए हुआ था। आधुनिक समय में इस व्यवस्था की प्रासंगिकता है या नहीं है आदि के बारे में जानना अति आवश्यक है। क्योंकि भारत एक लोकतांत्रिक गणराज्य है जिसका संचालन संविधान के द्वारा होता है, लेकिन जब यह मुल्क आजाद नहीं था तब राजशाही से किस प्रकार राज्य को चलाया जाता था तथा उस समय की यह मनसबदारी व्यवस्था कितना राज्य एवं जनता के हक में था। आदि के बारे में वास्तविक चीजों को जानना अति आवश्यक है ताकि राजतंत्र और लोकतंत्र के कानूनी गरिमा को समझा जा सके।

निष्कर्ष:- मुगल साम्राज्य में मनसबदारी प्रणाली एक परिष्कृत और गतिशील तंत्र था जिसने मुख्य रूप से मुगल साम्राज्य को शासन और सैनिक संगठनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसके रैंक उत्तरदायित्व और योग्यता आधारित दृष्टिकोण ने न केवल साम्राज्य के प्रशासन को आकार प्रदान किया, बल्कि मुगल संस्कृति और समाज की समृद्धि विरासत में भी अहम भूमिका निभाई। इस मनसबदारी व्यवस्था को देखा जाए तो यह प्रतीत होता है कि इस व्यवस्था ने मुगलों के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक गतिशीलता में एक अहम भूमिका निभाई। जिसके माध्यम से मुगलों ने अपने साम्राज्य को सुचारू रूप से चलाने में इस मनसबदारी व्यवस्था के माध्यम से अनेक फायदा लिया। क्योंकि इसी व्यवस्था के माध्यम से मुगलों ने अपने राज्य में सैनिक संगठन प्रणाली को स्थापित किया। जहांगीर और शाहजहां के समय तक यह मनसबदारी व्यवस्था अकबर कालीन शैली में थोड़े बहुत परिवर्तन के साथ-साथ व्यवस्थित रूप से चलती रही। राज्य का संचालन बहुत सुचारू रूप से हुआ और सम्राट का भी प्रतिष्ठा प्रदान किया गया। लेकिन औरंगजेब के समय उसमें बिखराव आने लगा था इसके बाद बादशाहों की शक्ति काफी क्षीण होते गई जिसके कारण मनसबदारी व्यवस्था भी काफी ठप्प पड़ गया।

संदर्भ सूची:-

- Reddy, P., B. Ghosh, S. Biswas, S. (2024). indian polity. Egpathshala. Retrieved from https://epgp.inflibnet.ac.in/epgpdata/uploads/epgp_content/S000829IC/P001771/M024833/ET/1510307718P10-M26-MughalEmpire-MansabdariSystem-ET.pdf
- Jamsari, E., A. Ashari, M., Z. A, H. M, M., R. Sulaiman, A., Safiai, M., H. Ibrahim, I., A. & Ahmad, M., Y. (2017). AKBAR (1556-1605) AND INDIA UNIFICATION UNDER THE MUGHALS. International Journal of Civil Engineering and Technology. Retrieved from https://iaeme.com/MasterAdmin/Journal_uploads/IJCIET/VOLUME_8_ISSUE_12/IJCIET_08_12_084.pdf
- Das, S. (2025). Impact of Akbar's Policies on Modern India. *International Journal of Novel Research and Development*.10 (6). Retrieved from <https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2506108.pdf>
- Kayali, Y. (2018). MUGHAL EMPEROR AKBAR AND HIS CAPITAL: THE FATEHPUR SIKARI. *Uluslararası Sosyal Araştırmalar Dergisi / The Journal of International Social Research*.11 (60). Retrieved from <https://www.sosyalarastirmalar.com/articles/mughal-emperor-akbar-and-his-capital-the-fatehpur-skr.pdf>
- **Jamsari**, E., A. (2017). akbar (1556-1605) and india unification under the mughals. IJCIET. Retrieved from https://iaeme.com/MasterAdmin/Journal_uploads/IJCIET/VOLUME_8_ISSUE_12/IJCIET_08_12_084.pdf
- Mukherjee, P. (2024). A Critical Analysis of Mansabdari System. *An Online Peer Reviewed / Refereed Journal*. 2 (4). Retrieved from <https://theacademic.in/wp-content/uploads/2025/12/74.pdf>